International Journal of Enhanced Research in Educational Development (IJERED)
ISSN: 2320-8708, Vol. 14 Issue 4, July-August, 2026

हनुमान बेनीवाल: राजस्थान विश्वविद्यालय की छात्र राजनीति से राष्ट्रीय राजनीति तक का सियासत सफर एक विस्तृत जीवनी एवं राजनीतिक विश्लेषण

महेश कुमार[1], प्रो. प्रवीण कुमार[2]

[1]शोधार्थी, राजनीति विज्ञान विभाग, डी.ए.वी. (पी.जी.) कॉलेज, बुलंदशहर
[2]शोध पर्यवेक्षक, राजनीति विज्ञान विभाग, डी.ए.वी. (पी.जी.) कॉलेज, बुलंदशहर

प्रस्तावना

राजस्थान की राजनीति पारंपरिक रूप से कांग्रेस और भाजपा के पास रही है, जहां सत्ता हर पांच साल में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस और भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के बीच बदलती रही है। इस मजबूत गढ़ को भेदना और एक स्वतंत्र ताकत के रूप में उभरना किसी भी नेता के लिए एक कठिन चुनौती रहा है। इस राजनीतिक परिदृश्य में, हनुमान बेनीवाल एक ऐसे राजनेता के रूप में उभरे, जिन्होंने न केवल इस द्विध्रुवीय व्यवस्था को चुनौती दी, बल्कि राज्य के युवाओं और किसानों के बीच एक मजबूत वोट बैंक तैयार किया। हनुमान बेनीवाल का राजनीतिक सफर किसी पारंपरिक राजनेता जैसा नहीं रहा है। इसकी शुरुआत जयपुर स्थित राजस्थान विश्वविद्यालय के छात्र आंदोलनों की तपती जमीन से हुई थी। छात्र राजनीति में अपनी बेबाक शैली, आक्रामक तेवर और जन-मुद्दों पर सीधे टकराव की नीति के कारण उन्होंने जो पहचान बनाई, वही पहचान आज उनकी राष्ट्रीय लोकतांत्रिक पार्टी की रीढ़ है।

संकेताक्षर - छात्रसंघ, छात्र राजनीति, हनुमान बेनीवाल, चुनाव, विश्वविद्यालय, लोकतंत्र ।

प्रारंभिक जीवन, पारिवारिक पृष्ठभूमि एवं शिक्षा -हनुमान बेनीवाल का जन्म 2 मार्च 1972 को राजस्थान के नागौर जिले के बरनगांव में हुआ था। उनके पिता, स्व. रामदेव बेनीवाल, राजस्थान की राजनीति का एक सम्मानित नाम थे और वे नागौर की मुंडवा विधानसभा सीट से दो बार विधायक चुने गए थे। उनके पिता दिग्गज किसान नेता नाथूराम मिर्धा के करीबी सहयोगी थे, जिसके कारण हनुमान बेनीवाल को बचपन से ही ग्रामीण राजनीति, किसानों के मुद्दों और सार्वजनिक जीवन को बहुत करीब से देखने का अवसर मिला। उनकी माता मोहिनी देवी ने उनके भीतर जमीनी मूल्यों और जुझारूपन को सींचा। बेनीवाल की प्रारंभिक शिक्षा ग्रामीण परिवेश में हुई, जिसके बाद वे उच्च शिक्षा के लिए जयपुर आए। उन्होंने राजस्थान विश्वविद्यालय से 1993 में कला स्नातक की उपाधि प्राप्त की। राजनीति में बढ़ती रुचि और कानूनी अधिकारों को समझने की इच्छा के कारण उन्होंने आगे की पढ़ाई जारी रखी और 1998 में विधि स्नातक तथा को-ऑपरेटिव में डिप्लोमा पूरा किया। उनका विवाह कनिका बेनीवाल से हुआ, और उनके दो बच्चे (बेटा आशुतोष और बेटी दिया) हैं। पारिवारिक पृष्ठभूमि राजनीतिक होने के बावजूद, हनुमान बेनीवाल को मुख्यधारा की राजनीति में स्थापित होने के लिए कड़ा जमीनी संघर्ष करना पड़ा, जिसकी शुरुआत राजस्थान विश्वविद्यालय के परिसरों से हुई। बेनीवाल परिवार ने राष्ट्रीय राजनीति और राजस्थान की राजनीति के साथ साथ जमीन से जुड़े लोगो की और अपने गाँव के लोगो की सेवा की है, इसी कारण हनुमान बेनीवाल के पिताजी आजीवन गाँव के सरपंच रहे है और माताजी मोहिनी देवी दो बार सरपंच रही है। बड़े भाईसाहब रामप्रसाद बेनीवाल भी दो बार सरपंच रहे है। आपने नागौर जिला परिषद् चुनाव 2004 में सबसे बड़ी जीत दर्ज की थी। वर्ष 2003 राजस्थान विधानसभा चुनाव में इनेलो पार्टी से चुनाव लड़ा और 36660 मत प्राप्त किये थे।

राजस्थान विश्वविद्यालय की छात्र राजनीतिः- राजस्थान विश्वविद्यालय को राजस्थान की राजनीति की 'नर्सरी' कहा जाता है। यहां की छात्र राजनीति ने राज्य को कई मुख्यमंत्री, केंद्रीय मंत्री और कद्दावर नेता दिए हैं। हनुमान बेनीवाल ने 1990 के दशक के मध्य में इस नर्सरी में कदम रखा और जल्द ही अपनी आक्रामक वक्ता शैली और जुझारू व्यक्तित्व के दम पर छात्रों के बीच लोकप्रिय हो गए।

राजस्थान कॉलेज छात्रसंघ अध्यक्ष - जयपुर आने के बाद बेनीवाल ने राजस्थान विश्वविद्यालय के संघटक कॉलेज, राजस्थान कॉलेज में प्रवेश लिया। ग्रामीण परिवेश से आने वाले छात्रों की समस्याओं, जैसे हॉस्टल आवंटन, प्रवेश प्रक्रियाओं में विसंगतियां और शहरी-ग्रामीण भेदभाव, को उन्होंने प्रमुखता से उठाया। उनकी इस जमीनी सक्रियता का परिणाम यह हुआ कि वे 1993 में राजस्थान कॉलेज छात्रसंघ के अध्यक्ष चुने गए।

यूनिवर्सिटी लॉ कॉलेज नेतृत्व और जेल यात्रा - कला स्नातक पूरी करने के बाद बेनीवाल ने यूनिवर्सिटी लॉ कॉलेज में दाखिला लिया। 1995 में वे लॉ कॉलेज छात्रसंघ के अध्यक्ष चुने गए। इसी वर्ष के दौरान राजस्थान विश्वविद्यालय में छात्र संघ चुनावों को लेकर भारी तनाव पैदा हो गया था। विपक्षी समूहों और प्रशासन के बीच विश्वविद्यालय बंद करने को लेकर विवाद चल रहा था। बेनीवाल और उनके सहयोगियों ने विश्वविद्यालय को जबरन बंद करने के प्रयासों का कड़ा विरोध किया। विश्वविद्यालय के मुख्य द्वार पर छात्रों और पुलिस के बीच हिंसक झड़प हुई, जिसके बाद पुलिस ने लाठीचार्ज किया। बेनीवाल और दर्जन भर से अधिक छात्र नेताओं को गिरफ्तार कर जयपुर केंद्रीय जेल में डाल दिया गया। इस जेल यात्रा ने बेनीवाल की छवि को एक 'संघर्षशील' और 'क्रांतिकारी' छात्र नेता के रूप में स्थापित कर दिया।

राजस्थान विश्वविद्यालय छात्रसंघ अध्यक्ष -छात्र राजनीति के शिखर पर पहुंचते हुए हनुमान बेनीवाल ने सितंबर 1997 में राजस्थान विश्वविद्यालय छात्रसंघ के मुख्य अध्यक्ष पद के लिए निर्दलीय उम्मीदवार के रूप में पर्चा भरा। इसी समय, जयपुर के जेसी बोस हॉस्टल में एक बेहद संवेदनशील और दर्दनाक सामूहिक बलात्कार की घटना सामने आई थी। इस घटना ने पूरे जयपुर और विश्वविद्यालय को हिलाकर रख दिया था। बेनीवाल ने इस घटना के खिलाफ न्याय की मांग को लेकर एक विशाल छात्र आंदोलन का नेतृत्व किया। उन्होंने आरोपियों की त्वरित गिरफ्तारी और कैंपस की सुरक्षा व्यवस्था को लेकर उग्र प्रदर्शन किए। इस आंदोलन ने उन्हें सर्वसमाज के छात्रों का नेता बना दिया। नतीजतन, 1997 के ऐतिहासिक चुनाव में उन्होंने पारंपरिक छात्र संगठनों के उम्मीदवारों को करारी शिकस्त दी और राजस्थान विश्वविद्यालय के छात्रसंघ अध्यक्ष बने।

छात्र राजनीति के मुख्य मुद्दे और संघर्ष - अध्यक्ष के रूप में बेनीवाल का कार्यकाल बेहद आंदोलनात्मक रहा। उनका सबसे बड़ा ऐतिहासिक योगदान ग्रामीण छात्रों के लिए 5 प्रतिशत बोनस अंक की मांग मनवाना था। उस समय ग्रामीण पृष्ठभूमि के छात्रों को शहरी स्कूलों के छात्रों की तुलना में विश्वविद्यालय प्रवेश में कठिनाई होती थी। बेनीवाल ने इसके खिलाफ अनशन, धरना और चक्का जाम किया। अंततः राज्य सरकार को झुकना पड़ा और ग्रामीण क्षेत्र के छात्रों के प्रवेश के लिए 5 प्रतिशत बोनस अंक की नीति को मंजूरी दी गई। इस फैसले ने बेनीवाल को राजस्थान के ग्रामीण अंचलों, विशेषकर किसान वर्ग के युवाओं के बीच एक मसीहा के रूप में स्थापित कर दिया।

मुख्यधारा की राजनीति में प्रवेश - विश्वविद्यालय की राजनीति से बाहर निकलने के बाद, हनुमान बेनीवाल ने अपने गृह जिले नागौर और मारवाड़ क्षेत्र को अपनी राजनीतिक कर्मभूमि बनाया । छात्र राजनीति का उनका अनुभव अब मुख्यधारा की चुनावी राजनीति में आजमाया जाने वाला था। वर्ष 2003 के विधानसभा चुनाव में बेनीवाल ने नागौर की मुंडवा सीट से निर्दलीय उम्मीदवार के रूप में अपनी किस्मत आजमाई। पहली बार के इस प्रयास में वे चुनाव तो नहीं जीत सके, लेकिन उन्होंने लगभग 36660 वोट हासिल किए और बहुत कम अंतर (लगभग 2,000 वोट) से हारे। इस प्रदर्शन ने स्थापित दलों को उनके राजनीतिक वजूद का अहसास करा दिया।

2008 में परिसीमन के बाद जब नई खींवसर विधानसभा सीट अस्तित्व में आई, तो भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) ने उनकी लोकप्रियता को देखते हुए उन्हें अपना उम्मीदवार बनाया। बेनीवाल ने इस चुनाव में नागौर जिले की सबसे बड़ी जीत दर्ज की और पहली बार राजस्थान विधानसभा पहुंचे। विधानसभा के भीतर और बाहर हनुमान बेनीवाल के तेवर अपनी ही पार्टी के नेतृत्व के खिलाफ तीखे होने लगे। उन्होंने तत्कालीन भाजपा सरकार और संगठन के शीर्ष नेताओं पर भ्रष्टाचार के आरोप लगाने शुरू कर दिए। उनका आरोप था कि कांग्रेस और भाजपा के कुछ बड़े नेता आपस में मिले हुए हैं और राज्य के संसाधनों को लूट रहे हैं। उन्होंने विशेष रूप से वसुंधरा राजे की नेतृत्व शैली पर सवाल उठाए। बीजेपी की सामंतवादी विचारधारा के कारण बीजेपी पार्टी का विरोध आपने किया था। पार्टी विरोधी गतिविधियों और अनुशासनहीनता के आरोपों के चलते 2013 के चुनाव से ठीक पहले भाजपा ने उन्हें पार्टी से निष्कासित कर दिया। भाजपा से निष्कासन बेनीवाल के राजनीतिक करियर का टर्निंग पॉइंट साबित हुआ।

2013 के विधानसभा चुनाव में पूरे देश और राजस्थान में प्रचंड 'मोदी लहर' थी। भाजपा एकतरफा जीत की ओर बढ़ रही थी। ऐसे माहौल में हनुमान बेनीवाल ने खींवसर सीट से निर्दलीय उम्मीदवार के रूप में ताल ठोकी। भाजपा और कांग्रेस दोनों ने उन्हें हराने के लिए अपनी पूरी ताकत झोंक दी थी। लेकिन बेनीवाल के प्रति युवाओं और किसानों की वफादारी इतनी मजबूत थी कि उन्होंने अपने निकटतम प्रतिद्वंदी को 24,600 से अधिक मतों के भारी अंतर से हराकर रिकॉर्ड जीत हासिल की। इस जीत ने साबित कर दिया कि हनुमान बेनीवाल किसी पार्टी के सिंबल के मोहताज नहीं हैं। 2008 से 2018 तक राजस्थान विधानसभा में राजस्थान की जनता के हित में सबसे ज्यादा प्रश्न पूछे थे।

हुंकार रैलियां और राष्ट्रीय लोकतांत्रिक पार्टी का गठन - 2013 से 2018 के बीच बेनीवाल ने राजस्थान में एक विकल्प की कमी को शिद्दत से महसूस किया। उन्होंने राज्य के विभिन्न जिलों का दौरा कर कांग्रेस और भाजपा के विकल्प के रूप में एक नई राजनीतिक ताकत की नींव रखनी शुरू की।

राजस्थान में कई बार तीसरे मोर्चे के प्रयोग हुए, लेकिन वे स्थायी नहीं हो सके। बेनीवाल ने समझा कि केवल चुनावी गठबंधन से काम नहीं चलेगा, बल्कि इसके लिए जनता के बीच जाकर एक बड़ा जनांदोलन खड़ा करना होगा। उन्होंने किसानों की कर्जमाफी, मुफ्त बिजली, और स्थानीय युवाओं को उद्योगों में 80 प्रतिशत रोजगार देने जैसे मुद्दों को अपना हथियार बनाया।

बेनीवाल ने अपनी ताकत दिखाने के लिए राज्यभर में 'किसान हुंकार रैलियों' की एक श्रृंखला शुरू कीःनागौर हुंकार रैलीः पहली रैली में ही लाखों की भीड़ जुटाकर उन्होंने अपने गढ़ को मजबूत किया। बाड़मेर और बीकानेर रैलियांः मारवाड़ के इन सीमावर्ती जिलों में रैलियों के माध्यम से उन्होंने जाट और अन्य किसान समुदायों को एकजुट किया। सितंबर 2018 में जयपुर के मानसरोवर में आयोजित उनकी रैली में उमड़े जनसैलाब ने दिल्ली और जयपुर के राजनीतिक गलियारों में खलबली मचा दी। 29 अक्टूबर 2018 को विधानसभा चुनाव से ऐन पहले हनुमान बेनीवाल ने जयपुर में राष्ट्रीय लोकतांत्रिक पार्टी के गठन की घोषणा की। पार्टी का चुनाव चिह्न 'बोतल' रखा गया। आरएलपी की मुख्य विचारधारा किसान कल्याण, युवा रोजगार, भ्रष्टाचार मुक्त प्रशासन, स्वामीनाथन रिपोर्ट को लागू करने पर आपने जोर दिया था, टोल मुक्त राजस्थान की बात भी आपने कई बार कही है और राजस्थान को विशेष राज्य का दर्जा दिलाना थी। 2018 के विधानसभा चुनाव में आरएलपी ने अकेले दम पर 3 सीटें जीतीं (खींवसर से खुद हनुमान बेनीवाल) और कई सीटों पर कांग्रेस-भाजपा के समीकरण बिगाड़ दिए।

संसदीय राजनीति और राष्ट्रीय स्तर पर पहचान - आरएलपी के गठन के बाद बेनीवाल का कद राज्य स्तर से बढ़कर राष्ट्रीय स्तर की ओर अग्रसर हुआ। 2019 के लोकसभा चुनाव में भाजपा विरोधी वोटों के ध्रुवीकरण को रोकने और राष्ट्रवाद के मुद्दे पर बेनीवाल ने राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन के साथ चुनावी समझौता किया। समझौते के तहत भाजपा ने नागौर लोकसभा सीट आरएलपी के लिए छोड़ दी। बेनीवाल ने कांग्रेस के दिग्गज नेता ज्योति मिर्धा को हराकर पहली बार लोकसभा सांसद के रूप में संसद में प्रवेश किया। खींवसर सीट खाली होने पर हुए उपचुनाव में उनके भाई नारायण बेनीवाल विधायक चुने गए।

किसान आंदोलन (2020) और एनडीए से ऐतिहासिक नाता तोड़ना - दिसंबर 2020 में जब केंद्र सरकार द्वारा लाए गए तीन कृषि कानूनों के खिलाफ देशव्यापी किसान आंदोलन शुरू हुआ, तो बेनीवाल के सामने अपनी राजनीतिक विचारधारा और सत्ता के बीच चयन करने की चुनौती थी। एक सच्चे किसान नेता की तरह, उन्होंने सत्ता का मोह छोड़कर दिसंबर 2020 में एनडीए से नाता तोड़ लिया। उन्होंने संसद की समितियों से इस्तीफा दे दिया और राजस्थान-हरियाणा सीमा (शाहजहांपुर बॉर्डर) पर हजारों किसानों के साथ धरने पर बैठ गए। इस कदम ने उनकी छवि को राष्ट्रीय स्तर पर एक अडिग किसान अधिकार कार्यकर्ता के रूप में स्थापित किया।

2024 का लोकसभा चुनाव और इंडिया ब्लॉक से गठबंधन - समय के साथ राजनीतिक समीकरण बदले। 2024 के लोकसभा चुनाव में हनुमान बेनीवाल की आरएलपी ने कांग्रेस के नेतृत्व वाले इंडिया ब्लॉक से गठबंधन के साथ हाथ मिलाया। नागौर सीट से वे पुनः चुनाव मैदान में उतरे और कड़े मुकाबले में जीत हासिल कर दूसरी बार लोकसभा सांसद बने। इसके बाद 2024 के अंत में हुए खींवसर विधानसभा उपचुनाव में उन्होंने फिर से अपनी पकड़ साबित की। वर्तमान समय (2026) तक, वे संसद के भीतर और बाहर देश के युवाओं और किसानों की आवाज बुलंद कर रहे हैं।

हनुमान बेनीवाल की राजनीतिक शैली और मुद्दे - हनुमान बेनीवाल की राजनीति की कुछ अनूठी विशेषताएं हैं जो उन्हें पारंपरिक राजनेताओं से अलग करती हैं।

युवा और रोजगार (भर्ती घोटाले, पेपर लीक के खिलाफ आंदोलन) - छात्र राजनीति की पृष्ठभूमि होने के कारण बेनीवाल युवाओं की नब्ज पहचानते हैं। उन्होंने राजस्थान लोक सेवा आयोग में हुए पेपर लीक मामलों, भर्ती घोटालों और बेरोजगारी के खिलाफ लगातार सड़कों पर प्रदर्शन किए हैं। केंद्र सरकार की अग्निपथ सैन्य भर्ती योजना के खिलाफ भी उन्होंने दिल्ली के जंतर-मंतर पर विशाल विरोध प्रदर्शनों का नेतृत्व किया है।

किसान और मजदूर अधिकार - किसानों के लिए मुफ्त बिजली, स्वामीनाथन आयोग की सिफारिशों के आधार पर एमएसपी की कानूनी गारंटी, और कृषि ऋणों की पूर्ण माफी उनके राजनीतिक एजेंडे के मुख्य बिंदु हैं। वे राज्य में अवैध बजरी खनन माफिया के खिलाफ भी मुखर रहे हैं।

सामाजिक ताना-बाना और 'छतीस कौम' की राजनीति - यद्यपि आलोचक उन्हें मुख्य रूप से एक जाट नेता के रूप में देखते हैं, बेनीवाल स्वयं को 'छतीस कौम' (सभी समुदायों) का नेता बताते हैं। उनकी रैलियों में दलित, पिछड़े और अल्पसंख्यक वर्ग के युवाओं की बड़ी भागीदारी यह दर्शाती है कि उनका प्रभाव केवल एक जाति तक सीमित नहीं है, बल्कि वे शोषित और वंचित वर्ग की सामूहिक आवाज बनने का प्रयास करते हैं।

चुनौतियां, आलोचनाएं और भविष्य की राह - हर बड़े नेता की तरह बेनीवाल का राजनीतिक सफर भी विवादों और चुनौतियों से अछूता नहीं रहा है –

जातीय तुष्टिकरण के आरोपः- विरोधी अक्सर उन पर मारवाड़ क्षेत्र में केवल एक विशेष जाति की राजनीति करने का आरोप लगाते हैं, जिससे अन्य समुदायों में कभी-कभी ध्रुवीकरण की स्थिति बनती है।

सीमित भौगोलिक विस्तारः- आरएलपी का प्रभाव मुख्य रूप से नागौर, जोधपुर, बाड़मेर, बीकानेर और सीकर जैसे पश्चिमी राजस्थान के जिलों तक ही अधिक सीमित रहा है। पूरे राज्य में संगठन का विस्तार करना उनके लिए आज भी एक बड़ी चुनौती है।

राजनीतिक इस्तेमाल की आलोचनाः - कुछ विश्लेषकों का मानना है कि उनकी पार्टी का उपयोग बड़े दलों द्वारा अपने राजनीतिक विरोधियों को कमजोर करने के लिए 'मोहरे' के रूप में किया जाता रहा है।

लोकप्रिय नारे और संवाद -
छतीस कौम का नारा है, हनुमान बेनीवाल हमारा हैः - यह उनका सबसे प्रसिद्ध नारा है, जिसका उपयोग वे यह दिखाने के लिए करते हैं कि वे किसी एक जाति के नहीं बल्कि सभी समाजों (छतीस कौमों) के नेता हैं।

मैं सेवा करूँगा, सरकार तुम बनाओः - हाल के दिनों में युवाओं और किसानों को राजनीतिक रूप से जागरूक करने के लिए दिया गया उनका एक बड़ा रणनीतिक नारा।

नाम तो मरने के बाद काम आता हैः - जनता के बीच उनके भाषणों का एक बेहद वायरल और लोकप्रिय डायलॉग।
ना झुके हैं, ना रुके हैं, ना डरे हैंः - उनके संघर्षपूर्ण राजनीतिक जीवन और आंदोलनों (जैसे भैराणा आंदोलन) को प्रदर्शित करने वाली लाइनें।

तेजाजी का जयकारा या तेजाजी पॉलिटिक्स - आप अपने भाषण शैली में सभी देवताओ का जयकारा लगवाते हो इसके द्वारा किसान कोम को एकजुट रहने का सन्देश देते हो।

प्रमुख राजनीतिक शब्द और कीवर्ड्स-
बोनट राजनीति - राजस्थान के फायरब्रांड नेता और राष्ट्रीय लोकतांत्रिक पार्टी के सुप्रीमो हनुमान बेनीवाल की उस आक्रामक और दबंग राजनीतिक शैली को कहा जाता है, जहां वे जनता की मांगें मनवाने के लिए किसी भी हद तक जाकर प्रशासनिक अधिकारियों पर दबाव बनाते हैं। यह शब्द तब चर्चा में आया जब उन्होंने स्वयं एक जनसभा में बयान दिया कि उन्होंने ''कलेक्टर को गाड़ी के बोनट पर बिठाकर जनता के पक्ष में फैसला कराया था। ''इस राजनीतिक शैली की मुख्य विशेषताएं - बेनीवाल धरना-प्रदर्शन के दौरान अधिकारियों को केबिन के बजाय सड़क पर जनसुनवाई करने के लिए मजबूर करते हैं। वे बंद कमरों के बजाय सीधे जनता के सामने गाड़ी के बोनट को टेबल बनाकर समझौते के कागजात साइन कराने के लिए जाने जाते हैं। वह राजस्थान की नौकरशाही और पुलिस प्रशासन को सीधे मंचों से चुनौती देते हैं। युवाओं और किसानों में लोकप्रियता उनके इस तीखे तेवर को उनके समर्थक (खासकर युवा और किसान) ''जनता का राज'' और ''शेर जैसा अंदाज'' मानते हैं। समर्थकों के बीच यह संदेश जाता है कि बेनीवाल बड़े से बड़े अधिकारी से डरते नहीं हैं और सीधे जनता के हक की लड़ाई ऑन-द-स्पॉट लड़ते हैं। विरोधी दल और आलोचक उनकी इस 'बोनट राजनीति' को अराजकता, सरकारी तंत्र पर अनुचित दबाव और 'अशोभनीय आचरण' का नाम देते हैं।आलोचकों के अनुसार, यह प्रशासनिक नियमों का उल्लंघन और केवल सुर्खियां बटोरने का एक तरीका है। संक्षेप में कहें तो, 'बोनट राजनीति' हनुमान बेनीवाल की उस व्यवस्था-विरोधी और सीधे टकराव वाली सियासत का प्रतीक है, जहां फैसले दफ्तरों की फाइलों में नहीं बल्कि सड़क पर गाड़ी के बोनट पर तुरंत तय होते हैं।

न्याय योद्धा - उनके समर्थक और युवा अक्सर उन्हें सोशल मीडिया पर इन उपाधियों से संबोधित करते हैं।
बोतल - यह राष्ट्रीय लोकतांत्रिक पार्टी का आधिकारिक चुनाव चिह्न है, जो नागौर और पूरे राजस्थान में उनकी पार्टी की पहचान बन चुका है।

किसान-जवान और दलित - बेनीवाल की राजनीति के तीन मुख्य स्तंभ, जिनके अधिकारों और मुद्दों (जैसे अग्निपथ योजना का विरोध, कर्जमाफी) पर वे हमेशा बात करते हैं।

हुंकार रैली - राष्ट्रीय लोकतांत्रिक पार्टी के गठन के समय राजस्थान के अलग-अलग जिलों में बेनीवाल द्वारा की गई विशाल जनसभाओं को 'हुंकार रैली' नाम दिया गया था।

व्यवस्था परिवर्तन - वे अक्सर कहते हैं कि उनका लक्ष्य केवल सत्ता पाना नहीं, बल्कि भ्रष्ट प्रशासनिक और राजनीतिक ''व्यवस्था में परिवर्तन'' करना है।

तीसरा मोर्चा - कांग्रेस और भाजपा के अलावा राजस्थान में एक मजबूत तीसरा विकल्प तैयार करने की उनकी राजनीतिक मुहिम।
बजरी माफिया और पेपर लीक - नागौर सहित पूरे राजस्थान में अवैध बजरी खनन और युवाओं के भविष्य से जुड़े पेपर लीक मामलों के खिलाफ बेनीवाल लगातार मुखर रहे हैं।

निष्कर्ष

राजस्थान विश्वविद्यालय के गेट पर लाठियां खाने वाले एक साधारण छात्र नेता से लेकर देश की संसद में गूंजने वाली आवाज बनने तक, हनुमान बेनीवाल का सफर बेहद संघर्षपूर्ण रहा है। उन्होंने साबित किया है कि यदि आपके पास मजबूत जन-आधार और मुद्दों के प्रति प्रतिबद्धता हो, तो बिना किसी बड़े राष्ट्रीय दल के भी राजनीति के शीर्ष पर पहुंचा जा सकता है। व्यवस्था परिवर्तन का

जो संकल्प उन्होंने राजस्थान विश्वविद्यालय की छात्र राजनीति के दौरान लिया था, उसी तेवर के साथ वे आज भी सक्रिय हैं। राजस्थान के राजनीतिक इतिहास में तीसरे मोर्चे के स्तंभ के रूप में उनका नाम हमेशा प्रासंगिक रहेगा, और आने वाले वर्षों में राज्य की राजनीति की दिशा तय करने में उनकी भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण बनी रहेगी।

संदर्भ ग्रंथ

1. विकिपीडिया (2026). ''हनुमान बेनीवाल - राजनीतिक जीवन और परिचय''. विकिपीडिया (हिंदी) - हनुमान बेनीवाल भारत राजस्थान.
2. ''नागौर सांसद हनुमान बेनीवाल ने रेल परियोजनाओं को लेकर लोकसभा में उठाए प्रश्नय नागौर-फलोदी ट्रैक अपडेट''.
3. पॉलिटाक्स न्यूज ब्यूरो. (2026,). ''स्वास्थ्य बजट और रिसर्च प्रस्तावों की कमी पर सांसद बेनीवाल का लोकसभा में केंद्र पर हमला''.
4. द लल्लनटॉप. (2018). ''राजस्थान के उस छात्रनेता की कहानी, जिसने नई पार्टी खड़ी कर दीः हनुमान बेनीवाल प्रोफाइल
5. हिंदुस्तान टाइम्स (2019).
6. द हिंदू (2024).
7. नवभारत टाइम्स (2025). ''लगातार मेहनत और जुझारूपनः बेनीवाल का आक्रामक अंदाज क्यों अफसरों और सत्ता को चैंका देता है''.